SHODH PRAKASHAN
An International Open Access, Peer Reviewed, Refereed Journal
ISSN : 2583-9861
VOL. 3, ISSUE 11, MAY 2026
Available Online : http://shodhprakashan.in/

मुरिया जनजाति के स्थानीय उपचारकों की परंपरागत चिकित्सीय पद्धति में आधुनिकता का प्रभाव एवं परिवर्तन का विश्लेषण

डॉ. सुनीता सोड़ी[1], डॉ. अशोक प्रधान[2]

1 रिसर्च एसोसिएट, साहित्य एवं भाषा-अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
2 मानवविज्ञान अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

सारांश

यह जनजाति प्रारंभ से ही वनों पर आश्रित है |मुरिया जनजाति किसी भी बीमारी के इलाज के लिए जादुई-धार्मिक अनुष्ठान, जड़ी- बुटियों पर विश्वास करते हैं । स्वास्थ्य और रोगों के मध्य अनेक मान्यताएं, रीति-रिवाज, मूल्य एवं प्रथाएं रही हैं जिनमें सदैव एक संबंध रहा है | सिरहा, वड्डे, पुजारी एवं दाई इन पारंपरिक चिकित्सकों द्वारा लोगों के स्वास्थ्य की देखभाल करते हैं |ये सामुदायिक चिकित्सक होते हैं जिन्हें सामाजिक संगठन द्वारा धार्मिक रूप से मान्यता प्राप्त होती है| प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्धेश्य स्वास्थ्य देखभाल करने हेतु मुरिया जनजाति के स्थानीय परंपरागत चिकित्सीय पद्धति का अध्ययन करना तथा उनमें आधुनिकता के प्रभाव से हुये परिवर्तनों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है| यह शोध छतीसगढ़ राज्य के बस्तर संभाग की सुकमा जिले में निवासरत मुरिया जनजाति के सिरहा, वड्डे, पुजारी एवं दाई इन कुंजी सूचनादाताओं का चयन उद्धेश्यमूलक विधि से कर तथ्यों की जानकारी ली गई है | यह अध्ययन प्राथमिक तथ्यों पर आधारित है| पारंपरिक चिकित्सकों द्वारा लोगों के बीमारी उपचार हेतु प्राकृतिक औषधि, जीव-जन्तु एवं जादुई-धार्मिक पद्धति से नि:शुल्क सेवाएँ प्रदान किया जाता है |स्थानीय लोग इस प्रकार के रोग जैसे- पेट फूलना, कष्टदायक प्रसव, बिच्छू दंश, हड्डी टूटना, बवासीर, कमजोरी, मलेरिया, चेचक, पागलपन एवं पीलिया इन बिमारियों के उपचार के लिए प्राथमिक रूप से पारंपरिक चिकित्सकों के पास जाते हैं । स्थानीय उपचारक अपनी परंपरागत ज्ञान को विरासत में नई पीढ़ी को देते हैं |विभिन्न बिमारियों का उपचार इनके द्वारा कई पीढ़ियों से लगातार किया जा रहा है |

कुंजीशब्द: छत्तीसगढ़, बस्तर, मुरिया जनजाति, चिकित्सीय पद्धति, परंपरागत ज्ञान, आधुनिकीकरण, औषधियाँ, जीव-जन्तु, जादुई-धार्मिक ।

भूमिका

जनजातीय स्वास्थ्य देखभाल के लिए प्रकृति से उपलब्ध पदार्थ उनके पारंपरिक जीवन का मुख्य हिस्सा है| पारंपरिक जनजातीय समुदाय विभिन्न बिमारियों के उपचार हेतु जादुई-धार्मिक अनुष्ठान एवं जड़ी-बूटी पर विश्वाश करते हैं | स्वास्थ्य और रोगों से सम्बंधित मान्यताएं एवं रीति-रिवाज, मूल्य और प्रथाओं के मध्य सदैव एक संबंध रहा है (Balgir, 2006)| पारंपरिक चिकित्सा पद्धत्ति जिसका संबंध स्वास्थ्य, रोग, और संस्कृति से है | पारंपरिक चिकित्सा बहुत ही जटिल है जिसका उपयोग पौधों,अध्यात्मिक और प्राकृतिक वातावरण से है (Krippner, 2003)| लोकाचार, धार्मिक अनुष्ठानों, कहानियाँ, मिथक और लोक धुन एवं चिकित्सा संबंधी गतिविधियों से पौधे गहराई से जुड़े हुए हैं और मानव संस्कृति उनसे प्रभावित होती है (Badoni & Badoni, 2001)| जनजातियों में जैव विविधता की रक्षा करने की क्षमता होती है जिससे संरक्षण के प्रयास में परंपरागत प्रथाओं और विश्वास को शामिल किया जाना चाहिए (Verschuuren et al. 2010, Allendorfs et al. 2014)| मानव के बेहतर जीवन के लिए जनजातीय लोग जादुई-धार्मिक मान्यताओं और अनुष्ठानों में पवित्र पौधों के एक या अनेक भागों का उपयोग किया जाता है (Sonowal, 2016)|

जनगणना 2011 के अनुसार भारत में कुल 705 अनुसूचित जनजाति और कुल 75 विशेष पिछड़ी जनजाति को सूची में शामिल किया गया है| भारत की अनुसूचित जनजातियों की कुल जनसंख्या 10,42,81,034 है जो भारत की कुल जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत है| वैष्णव (2017) के अनुसार मुरिया शब्द की व्युत्पति मुर से मानी जाती है, जो मूल का अपभ्रंश है मूल का अर्थ आरम्भ की जाती या जड़ मानी जा सकती है | मुरिया जनजाति अपने गोटूल संस्था के कारण बस्तर में अपनी पहचान बनाई हुई है | गोटूल मुरिया युवक-युवतियों के सामाजिक-सांस्कृतिक, धार्मिक शिक्षा का केंद्र है (Elwin, 1947) | इस समुदाय की मातृबोली गोंड़ी है और इनके द्वारा हल्बी बोली का भी प्रयोग किया जाता है | अपनी आजीविका की पूर्ति खाद्य संकलन, शिकार, पशुपालन व कृषि से करते हैं (Behar, 1995) | गोंड़ की उपजाति मुरिया जनजाति जो की बस्तर संभाग के समस्त जिलों में निवास करती है | बस्तर क्षेत्र खनिज सम्पदा और वनों से परिपूर्ण है |

शोध अध्ययन का उद्धेश्य : प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्धेश्य निम्नानुसार है –

1. स्वास्थ्य देखभाल के लिए मुरिया जनजाति के स्थानीय परंपरागत चिकित्सीय पद्धति का अध्ययन करना|

2. आधुनिकता के प्रभाव से परंपरागत चिकित्सीय पद्धतियों में हुये परिवर्तनों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाना है |

शोध प्रविधि : यह शोध अध्ययन के लिए छत्तीसगढ़ राज्य में बस्तर संभाग के सुकमा जिले से कुढ़केल ओर पलिया इन दो गावों में निवास कर रहे मुरिया जनजाति का चयन किया जगया है| पारंपरिक चिकित्सीय पद्धति की जानकारी रखने वाले सिरहा, पुजारी, वड्डे, हडजोड़ एवं दाई इन 15 कुंजी सुचनादाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि से कर तथ्यों की जानकारी ली गई है| प्राथमिक स्रोत में अर्द्ध-सहभागी अवलोकन, साक्षात्कार निर्देश,

समूह वार्तालाप एवं फोटोग्राफ है, तथा द्वितीयक स्रोत में शोध पत्र पुस्तकों से शोध के लिए तथ्यों का संकलन किया गया है| इन प्राथमिक तथ्यों का विश्लेषण गुणात्मक विधि से किया गया है|

परिणाम एवं चर्चा :

परंपरागत चिकित्सीय उपचार पद्धति की विधि : स्वास्थ्य के क्षेत्रों में रोग उपचार के लिए स्थानीय चिकित्सकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है| यह परंपरागत चिकित्सक अपने दैवीय शक्ति और प्राकृतिक औषधियों के पारंपरिक ज्ञान के आधार पर रोग का उपचार करते हैं| उपचार हेतु परंपरागत चिकित्सकों द्वारा अपनाए जाने वाले परंपरागत चिकित्सीय पद्धति निम्नानुसार है जैसे :

1. **सिड़ल :-** सिरहा जिसे गोंडी बोली में सिड़ल कहा जाता है| सिरहा एक धार्मिक विशेषज्ञ है, इनमें दैवीय शक्ति का वास होता है| यह अपने आध्यात्मिक शक्ति से गाँव की सुरक्षा और समाज के लोगों के अस्वस्थ होने पर उनका उपचार करते हैं| सिरहा अपने शरीर में देव को बुलाता है उस देव की शक्ति से रोगी व्यक्ति का नाड़ी और सिर के अंग को स्पर्श करके तथा व्यक्ति के नाम से बीमारी का पता लगाया जाता है| रोगी व्यक्ति को सिरहा अपने सामने बिठाकर आध्यात्मिक शक्ति से तंत्र-मंत्र के द्वारा झाड़-फूँक कर बीमारी में हो रहे दर्द को कम करता है और उस बीमारी को दूर करने के लिए उपाय बताया जाता है| जब वह रोगी व्यक्ति दूसरी बार सिरहा के पास उपचार के लिए आता है तब पूर्व में बताए उपाय अनुसार देवताओं के विश्वास से अनुष्ठानिक क्रियाओं को कर रोग का उपचार किया जाता है| इन्हें जड़ी-बूटी का भी काफी अच्छा ज्ञान होता है, जिसे वे अपने पूर्वजों से सीखे हुये होते हैं| भूतप्रेत, पागलपन व देवताओं के प्रकोप से हो रहे रोग का उपचार आध्यात्मिक शक्ति से किया जाता है, तथा प्राकृतिक रूप से हुये बीमारी जैसे बुखार, सर्दी, खांसी, पेट दर्द, पीलिया एवं बवासीर आदि के लिए जड़ी-बूटी से उपचार किया जाता है|

2. **वड्डे :-** वड्डे भी अपनी आध्यात्मिक शक्ति से झाड़-फूँक कर रोगी व्यक्ति का उपचार करता है| वड्डे विशेषज्ञ जिनके उपचार पद्धति में विभिन्नताएँ हैं, जैसे :

   उदनोर वड्डे – उदनोर वड्डे अर्थात "फूंकने वाला वड्डे" कहा जाता है| वड्डे विशेषज्ञों के द्वारा बीमारी व्यक्ति का नाड़ी स्पर्श कर और चांवल का प्रयोग करके बीमारी का पता लगाया जाता है| ये रोगी व्यक्ति को बैठाकर तंत्र-मंत्र से झाड़-फूँक कर सामान्य बीमारी का उपचार करता है|

   कसनोर वड्डे - कसनोर वड्डे अर्थात "काटने वाला वड्डे" को कहते हैं| पेट दर्द, कमर दर्द, सिर दर्द व शरीर के अन्य अंगो में दर्द वाले रोगी व्यक्ति उपचार करने के लिए इनके पास आते हैं| यह वड्डे झाड़-फूँक कर तंत्र-मंत्र के प्रयोग से रोगी व्यक्ति के पेट अथवा कमर में काटकर बीमारी का उपचार करता है| पेट अथवा कमर में काटने के पश्चात रोगी व्यक्ति के शरीर से हड्डी, मछली कांटा, मिटटी, पत्थर, मिर्ची व अन्य चीजें वड्डे अपने मुँह से बाहर निकालता है| यह वस्तुएं निकलने पर "जादू-टोना के प्रकोप" को माना जाता है, फिर उसका उपचार जादुई-धार्मिक अनुष्ठानिक क्रियाओं से किया जाता है|

   बुल अद्क्नोर वड्डे – बुल अद्क्नोर वड्डे अर्थात "हड्डी जोड़ने वाला वड्डे" हडजोर है| ये वड्डे अपने तंत्र-मंत्र कर झाड़-फूँक की पद्धति से शरीर के अंदरूनी मोच, जोड़ों में दर्द और टूटे हड्डी को जोड़ने का कार्य करता है| औषधि वाले पौधों के जड़ व तनों को पीसकर उसका लेप टूटी हड्डी और मोच में लगाकर वस्त्र से

SHODH PRAKASHAN
An International Open Access, Peer Reviewed, Refereed Journal
ISSN : 2583-9861
VOL. 3, ISSUE 11, MAY 2026
Available Online : http://shodhprakashan.in/

कसके बांधा जाता है, तथा इस लेप को 5 से 7 दिनों तक पानी से गीला न करने का सुझाव भी दिया जाता है| हफ्ते भर के अंतराल में नए लेप लगाकर वस्त्र से पुन: बांधा जाता है और ठीक होने तक यह प्रक्रिया चलते रहती है|

मत इनोर वड्डे – जड़ी-बूटी देने वाले वड्डे को गोंडी में "मत इनोर वड्डे" कहा जाता है| यह वड्डे अपनी आध्यात्मिक शक्ति का प्रयोग कर तंत्र-मंत्र से झाड़-फूँक करता है| जब ये रोगी व्यक्ति का उपचार करते हैं तब उनके बीमारी को ठीक करने के लिए अपने दैवीय शक्ति के मंत्र से जड़ी-बूटी को वनों से लेकर आते हैं और उसे सेवन करने के लिए दिया जाता है| जड़ी-बूटी का ज्ञान और औषधि के खुराक की विधि का प्रशिक्षण इन्होने अपने पिता व दादा से परंपरागत रूप से लिया है|

पुजड़ :- पुजारी को गोंडी में "पुजड़" कहा जाता है| यह धार्मिक अनुयायी है इनका पद अनुवांशिकी होता है जिन्हें सामुदायिक रूप से मान्यता प्राप्त होती है| कुछ पुजारी जो देवगुड़ी में सेवा देने के अतिरिक्त बीमारी का उपचार भी करते हैं| यह चांवल का प्रयोग कर अपने देवता के नाम से झाड़-फूँक कर रोगी व्यक्ति को ठीक करने का प्रयास करते हैं|

बोडूक कोएदनद मुत्ते :- दाई को गोंडी बोली में "बोडूक कोएदनद मुत्ते" कहते हैं| यह दाई ग्राम की गर्भवती महिलाओं में सामान्य प्रसव का कार्य करती है| काफी समय से पारंपरिक रीति-रिवाजों को ध्यान में रखते हुये गर्भवती महिलाओं के कष्टदायक प्रसव में भी उनका सामान्य प्रसव करती है|

उपचार के लिए उपयोगी परंपरागत औषधि के प्रकार :

मुरिया जनजाति में बीमारी के उपचार हेतु उपयोग किये जाने वाले औषधीय पौधों के नाम निम्नानुसार है :–

अ. औषधीय पौधे

1. पेट फूलना (Gastric) :-

औषधीय तत्व- हर्रा, बहेड़ा

विधि – हर्रा व बहेड़ा के फल को बराबर मात्रा में पीसकर उसके चूर्ण को आधा कप पानी में घोलकर उसका सेवन प्रतिदिन में दो बार 3-4 दिनों तक किया जाता है|

हर्रा
(Terminalia chebula)

बहेड़ा
(Terminalia bellirica)

SHODH PRAKASHAN
An International Open Access, Peer Reviewed, Refereed Journal
ISSN : 2583-9861
VOL. 3, ISSUE 11, MAY 2026
Available Online : http://shodhprakashan.in/

2. **कष्टदायक प्रसव (Complicated delivery)** :-

औषधीय तत्व- अपामार्ग , चिटचिटा

विधि – अपामार्ग के जड़ को पीसकर उसके रस का सेवन 1-2 बार थोड़ी मात्रा में किया जाता है|

चिटचिटा (Achyrantus aspera)

3. **बिच्छू दंश (Scorpion bite) :-**

औषधीय तत्व- करील

विधि – कोमल बांस के तने को जलाकर उससे प्राप्त राख को बिच्छू दंश के प्रभावित स्थान पर एक दिन में एक बार लगाया जाता है| वड्डे तंत्र-मंत्र से झाड़-फूँक कर शरीर में फैले जहर को उतारता है|

करील (Bambusa qrundinacea)

4. **हड्डी टूटना (Bone fracture) :-**

औषधीय तत्व- हडजोड़ तना

विधि – हडजोड़ के तने को बारीक़ पीसकर तेल के साथ लेप तैयार कर प्रभावित अंग में वस्त्र से बाँधकर रखते हैं और उसे 7 से 8 दिनों तक पानी से नहीं भिगाया जाता है | 8 दिनों बाद पुन: लेप लगाकर प्रभावित अंग पर वस्त्र की पट्टी बांधी जाती है|

हडजोड़ तना (Cissus quadrangularis)

ब. जीव-जन्तु औषधि -

1. **बवासीर (Piles) :-**

औषधीय तत्व - कछुआ

विधि - काले कछुए के मांस को सुखाकर पीसकर उसके चूर्ण का सेवन कराया जाता है| इसकी खुराक सुबह – शाम ठीक होते तक ½ चम्मच दिया जाता है|

कछुआ
(Nilssonia gangetica)

2. **कमजोरी (Weakness)**

औषधीय तत्व- कबूतर, मांगुर मछली

विधि – काले कबूतर व मोंगरी मछली की सब्जी बनाकर सेवन किया जाता है| इसका सेवन रक्त की

कबूतर
(Columba livia)

मांगुर मछली
(Clarias magur)

SHODH PRAKASHAN
An International Open Access, Peer Reviewed, Refereed Journal
ISSN : 2583-9861
VOL. 3, ISSUE 11, MAY 2026
Available Online : http://shodhprakashan.in/

कमी को दूर करने के लिए सप्ताह में 1 बार 2-3 माह तक किया जाता है|

3. **मलेरिया (Maleria)**

औषधीय तत्व – चापड़ा

विधि – शरीर के सिर के भाग को ढँककर अन्य भागों में चापड़ा चींटी से शरीर को कटवाया जाता है तथा चींटी के काटने से त्वचा में फार्मिक एसिड छोड़ती है, जिससे जलन, दर्द और गर्मी उत्पन्न होती है| इस बीमारी को दूर करने के लिए चापड़ा की चटनी भी बनाकर सेवन किया जाता है| शरीर में चापड़ा चींटी कटवाने का काम दिन में एक बार और चटनी का सेवन प्रत्येक दिन किया जाता है|

चापड़ा (Oecophylla smaragdina)

स. जादुई-धार्मिक उपचार –

1. **चेचक (Chiken pox)**

औषधीय तत्व- नीम पत्ती

विधि – नीम पत्ता पीसकर उसके रस को ½ कप दिन में दो बार सेवन किया जाता है| रात्री के समय बिस्तर में नीम पत्ती बिछाकर उसके ऊपर शयन किया जाता है| यह 10 दिन की अवधि तक किया जाता है| चेचक ग्राम देवी के प्रकोप के कारण होती है ऐसी मान्यता है, जिस कारण देवगुड़ी में चेचक हुये व्यक्ति को 10 दिनों तक धूप देकर उन्हें ठीक करते हैं|

2. **पागलपन (Insanity)**

धार्मिक कर्मकाण्ड – देवगुड़ी में सिरहा को देव बिठाते हैं और वे मंगलवार और शनिवार के दिन में पागल हुए व्यक्ति के सिर व हाथ के अंग को स्पर्श कर पागलपन के कारण का पता लगाता है| कारण पता चलने पर वह अपने आध्यात्मिक शक्ति से उस पागल व्यक्ति का उपचार करते हैं| सिरहा अपने तंत्र-मंत्र से बुरी शक्ति को उसके शरीर से बाहर निकालता है| पागल व्यक्ति के ठीक होने पर देवता की इच्छानुसार उनके परिवार द्वारा देव को बकरा या सोने के छत्तर चढ़ाते हैं |

3. **पीलिया (Jaundice)**

औषधीय तत्व- देव सिहाड़ी

विधि – देव सिहाड़ी के मोटी जड़ को सफ़ेद मोटा धागा से माला बनाकर कुल देवता की पूजा अर्चना करके उस माला को बीमार व्यक्ति के गले में पहनाया जाता है | उस माला में बंधी लकड़ी एक एक करके धागे से ढीला होकर अपने आप गिरती है तब सभी लकड़ी गिरते तक उस माला को गले में पहना जाता है| माला में बंधी दवाई की लकड़ी गिरने पर सिरहा अपने तंत्र-मंत्र से उस धागे को गले से

वड्डे द्वारा तंत्र-मंत्र से झाड़-फूँक कर उपचार करते हुये

निकाल देता है | वह लकड़ी धागे से सुखकर गिरती है तो बीमारी धीरे धीरे शरीर से कम हो रही है, ऐसी मान्यता है |

आधुनिकता के प्रभाव से परंपरागत चिकित्सीय पद्धति में हुये परिवर्तन : मुरिया जनजाति के परंपरागत चिकित्सीय पद्धति में परिवर्तन स्पष्ट रूप से दिखालाई पड़ती है | इस आधुनिकीकरण युग में मैदानी क्षेत्रों में निवास कर रहे मुरियाजन शिक्षा ग्रहण करने से उनमें जागरूकता बढ़ी और वे शासकीय योजनाओं से जुड़ रहे हैं, जिस कारण वे अब विभिन्न बीमारियों के इलाज और गर्भवती महिलाएं अपना प्रसव सरकारी अस्पतालों से करवाती हैं, इस प्रकार से स्वास्थ्य देखभाल हेतु शासकीय चिकित्सीय पद्धति का प्रयोग करना प्रारंभ कर रहे हैं | जलवायु परिवर्तन होने से तापमान में वृद्धि और बाढ़ जैसी समस्याएँ बढ़ रही है, जिस कारण वनो से औषधियाँ तेजी से विलुप्त हो रही है| परंपरागत चिकित्सीय पद्धति का लिखित अभाव होने के कारण पारंपरिक वनौषधियाँ एवं परंपरागत चिकित्सीय पद्धति के ज्ञान से वर्तमान की भावी पीढ़ी अपरिचित है|

निष्कर्ष : बस्तर की मुरियाजन अपने स्वास्थ्य देखभाल के लिए परंपरागत एवं आधुनिक दोनों चिकित्सीय पद्धति का प्रयोग कर रहे हैं, किन्तु आज भी प्राथमिकता परंपरागत चिकित्सा पद्धति को ही देते हैं | स्वास्थ्य देखभाल के लिए स्थानीय परंपरागत चिकित्सक नि: शुल्क सेवा प्रदान करते हैं| पारंपरिक चिकित्सकों द्वारा लोगों के बीमारी के उपचार हेतु परंपरागत औषधी, जीव-जन्तु व जादुई-धार्मिक के अनेक तरीकों से सेवाएँ प्रदान किया जाता है | अशिक्षा के कारण प्रत्येक बीमारी को वे देवी-देवता से जोड़ देते हैं | इनका देवी-देवताओं, तंत्र-मंत्र, झाड़-फूँक, जादुई एवं जड़ी-बूटी पर अटूट विश्वास देखा गया है, इस तरह वे परंपरागत चिकित्सा पद्धति को सक्षमता पूर्वक आगे बढ़ा रहे हैं| इनकी परम्परागत पद्धति इनके जीवन शैली को निर्देशित करता है |

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. Balgir, R. (2006). Tribal Health Problems, Diseases Burden and Ameliorative Challenges in Tribal Communities with special emphasis on Tribes of Orissa. *Tribal Health: Proceedings of National Symposium. Regional Medical Research Centre for Tribals, Indian*. https://share.google/3gSFbEF7CEXohABd.
2. Krippner, S. (2003). Models of Ethnomedicinal Healing. *Paper Presented at the Ethnomedicine Conferences,* Munich, Germany. 26-27 April and 11-12 October.
3. Badoni, A., & Badoni, K. (2001). Ethnobotanical Heritage. In O. P. Kandari (Ed.), *Garhwal Himalaya: Nature, Culture & Society*. Trans Media.
4. Verschuuren, B., Wild, R., McNeely, J. A. & Oviedo, G. (2010*). Sacred Natural Sites: Conserving Nature and Culture.* Earthscan Ltd.
5. Sonowal, R. (2016). Sacred plants of the Sonowal Kachari tribe of Assam, Northeast India. In D. Dutta, R. Sonowal, & A. Goswami (Eds), *Dimensions of multidisciplinary research studies*. Kasturi Prakashan.
6. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. (2011). *Census of India 2011.* https://censusindia.gov.in/
7. Vaishnav, T. K. (2017). *Chhattisgarh Ki Janjatiyan (In Hindi).* Raipur: Chhattisgarh Rajya Hindi Granth Academy.

8. Elwin, V. (1947). *The Muria and Their Ghotul*. Bombay: Oxford University Press.
9. Behar, R. (1995). *Bastar ek Adhyayan (In Hindi).* Bhopal: Madhyapradesh Hindi Granth Academy.